राजकोट-पंचशील(गुज.)। ब्लड डोनेशन कैम्प का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. भारती, नाथानी ब्लड बैंक के मालिक के.डी.पटेल, ब्र.कु.दक्षा, ब्र.कु.रसिला, ब्र.कु. अंजू तथा अन्य।

सीकरी-राज.। 'राजस्थान किसान सशक्तिकरण अभियान' के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए विधायक अनिता सिंह, सरपंच लखवीर सिंह, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. बबिता तथा अभियान के सदस्य।

राँची। भाईदूज के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया के प्रमुख विश्वनाथ सिंह, बी.एस.एन.एल. के एस.डी.ओ. शशिकांत प्रसाद, ब्र.कु.निर्मला तथा एकल संस्थान के राष्ट्रीय प्रमुख अमरेन्द्र विष्णु पुरी।

खटीमा-उत्तराखण्ड। चैतन्य देवियों की झाँकी के अवलोकन पश्चात् गुरूद्वारा नानकमत्ता डेराकार सेवा समिति के प्रमुख तरशेम सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सपना। साथ हैं ब्र.कु. उमेश।

वरठी-भंडारा रोड (महा.)। 'स्वर्णिम संस्कृत भारत निर्माण में कलाकारों का योगदान' कार्यक्रम में कला-संस्कृति प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. कुसुम को मोमेन्टो भेंट करते हुए ब्र.कु.उषा तथा ब्र.कु.दयाल।

रेवाड़ी-हरियाणा। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान एस.डी.ओ. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कमलेश व ब्र.कु. एकता।

मनुष्य अपनी प्रकृति अनुरूप कर्म करता है

- गतांक से आगे...

भक्त अर्थात् जो अनन्य भाव से उसको याद करते हैं। उसके प्रति जिनका समर्पण भाव है वही उसको जान सकते हैं, समझ सकते हैं और उस दिव्य स्वभाव की ओर वो आकर्षित होते हैं और उसी के आधार पर उस दिव्य स्वभाव को अपने अंदर भी प्राप्त कर सकते हैं। ये है परमात्मा के विषय में स्पष्टीकरण जिसे और अधिक रूप से 21 श्रेणियों के आधार पर, उसने अपनी असीम ऐश्वर्य सौंदर्य के वर्णन में समझाया। फिर भगवान ने बताया कि प्रकृति और पुरुष किस तरह इस संसार के खेल में अपना कार्य करते हैं। प्रकृति और पुरुष अनादि हैं। ये तीनों अनादि और अविनाशी हैं - प्रकृति, पुरुष और परमपुरुष (परमात्मा)। कार्य और कारण को उत्पन्न करने हेतु प्रकृति है। अब यहाँ प्रकृति का भाव है - व्यक्ति का अपना स्वभाव। जैसी उसकी प्रकृति होती है, स्वभाव होता है, उसी के अनुसार वो कार्य भी करता है। कार्य और कारण को उत्पन्न करता है। कार्य करने के लिए भी कारण को उत्पन्न करता है, जैसा व्यक्ति का अपना नेचर (प्रकृति) होता है। किसी के अंदर सात्विक प्रकृति होती है, तो उसके कार्य और उसके कर्म करने का कारण उस अनुसार होता है। जिसकी रजो प्रकृति होती है, तो उसके कार्य भी वैसे होते हैं। जिसकी तमो प्रकृति है उसके कार्य भी वैसे होते हैं। पुरुष और प्रकृति के योग से जीवन व्यतीत होता है। शरीर माना प्रकृति के पाँच तत्व और पुरुष अर्थात् आत्मा, इन दोनों का योग होता है। योग माना सम्बन्ध होता है, तब जीवन व्यतीत होता है। पुरुष प्रकृति के साथ मिलकर शरीर का भरण-पोषण करता है। उसके साथ सुख, दु:ख को भोगता है। स्वयं को उसका स्वामी मानकर, अधीन करके चलाता भी है। ये प्रकृति को अधीन बनाकर चलाता है। कर्म अनुसार वह मानव अगली देह को प्राप्त करता है। जो पुरुष और प्रकृति के संयोग से हुए कर्म की गुह्य गति को समझ लेता है वह कर्म बंधन से मुक्त हो जाता है। इतनी स्पष्ट जानकारी परमात्मा ने पुरुष और प्रकृति के बीच बतायी है।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

आत्मानुभूति, आत्म साक्षात्कार, ये कुछ लोग ध्यान द्वारा, कुछ लोग ज्ञान द्वारा और कुछ लोग कर्मयोग द्वारा समर्पण के साथ नियत कर्म में प्रवृत्त होते हैं। अर्थात् आत्मानुभूति करनी है, आत्म-साक्षात्कार करना है, तो उसके ये तीन मार्ग बतलाए हैं। ध्यान के द्वारा कर सकते हैं आत्मानुभव, कुछ लोग ज्ञान से समझकर के लॉजिकल माइंड जो है, रेशनल थिंकिंग वाले जो हैं, वो ज्ञान के द्वारा उस चीज़ को समझकर के उसका अनुभव करते हैं। कुछ प्रैक्टिकल कर्म द्वारा मन के अंदर समर्पण भाव को लेकर नियत कर्म में प्रवृत्त होते हैं, उसी के द्वारा उसका अनुभव करते हैं। जो उसकी विधि नहीं जानते, वो लोग तत्व स्थित महापुरुषों द्वारा सुनकर आचरण करते हैं। जो आत्मायें महान हैं, जिन्होंने इस तत्व को समझा हुआ है, उसके द्वारा सुनकर के वे अपने जीवन में प्रेरणा प्राप्त करते हैं और आचरण में आते हैं। जो पुरुष साक्षी भाव में स्थित होकर कर्म करता है और समदृष्टि रखकर व्यवहार करता है और ईश्वर को सर्वज्ञ जानता है, वह अपना शत्रु कभी नहीं बनता है। क्योंकि जैसे पहले अध्यायों में बताया कि मन ही अपना मित्र है और अपना शत्रु है। तो किस प्रकार वो शत्रु बन जाता है, कैसे वह अपना मित्र बनता है?

साथ-साथ इसकी और विशेषताओं का वर्णन किया है कि विवेकवान पुरुष ये देखता है कि सारे कार्य शरीर द्वारा सम्पन्न किये जाते हैं और वह यह भाव विकसित करके कर्म करता है कि स्वयं और सबमें हर एक के अंदर एक दिव्य अविनाशी आत्मा है। अर्थात् आत्मभाव को जागृत करता है। साथ ही ये भाव विकसित करता है कि हर शरीर के अंदर एक चैतन्य शक्ति, दिव्य अविनाशी आत्मा है। जो शाश्वत् है।

- क्रमश:

ख्यालों के आईने में...

मैं दीपक हूँ, मेरी दुश्मनी तो
सिर्फ़ अंधेरे से है,
हवा तो बेवजह ही मेरे ख़िलाफ़ है!
हवा से कह दो कि खुद को
आज़मा के दिखाए,
बहुत दीपक बुझाती है,
एक जला के दिखाए...!!

रिश्तों में वैसा ही संबंध होना चाहिए
जैसे हाथ और आँख
का होता है।
हाथ पर चोट लगती है
तो आँखों से आँसू
निकलते हैं, और
आँसू आने पर हाथ ही
उनको साफ करता है!!

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें
आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

'Peace of Mind' channel
TATA Sky 1065 | airtel digital TV 678 | FASTWAY | GTPL | DEN
videocon d2h 497 | Reliance Digital TV 640 | hathway | UCN | DIGICABLE | SITI

Free to Air
ABS FREE DTH
KU Band with MPEG (DVB-S/S2) Receiver
LNB Freq. - 10600/10600
Tans Freq. - 11911
Polarization - Horizontal
Symbol - 44000
22k - On
Satellite - ABS-2; 75° E

Contact
Brahma Kumaris, 2nd Flr Anand Bhavan, Shantivan, Sirohi, Abu Rd, Raj-307510
+91 9414151111
+91 8104777111
info@pmtv.in
www.pmtv.in

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए

सम्पर्क - M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org,
Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये।

विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम से मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।